# प्रस्तावना

**I. प्रस्तावना (Introduction):**

भारतीय लोकतंत्र संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। जहाँ जमीनी सच्चाई देश को गठबंधन की राजनीति की ओर धकेल रही है। पिछले दशक से लगभग हर चुनावों के बाद किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के कारण विभिन्न दलों की मिली-जुली सरकार केंद्र व राज्यों में निर्मित हो रही है। जिसे गठबंधन सरकार या कई दलों की मिली-जुली या मिश्रित सरकार कहा जाता है।

संसदीय लोकतंत्र में सरकार का गठन करना, उसका संचालन करना, एवं पुनर्निर्माण, विशिष्ट संसाधनों की उपलब्धता, सहयोगियों की निश्चित संख्या, सुनिश्चित राजनीतिक आधार एवं राजनीतिक निपुणता आदि कारकों पर आधारित होती है।

गठबंधन की राजनीति परिस्थितियों के गर्भ से उत्पन्न होती है। संसदीय शासन प्रणाली मंर उसी राजनीतिक दल को सरकार के गठन का अधिकार प्राप्त है ,जिसके पास संसद को निचले सदन में आधे से अधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त होता है। उसे सरकार बनाने व शासन संचालन करने का अवसर प्राप्त होता है।

सिद्धांत में भारत एक संघीय राज्य है। प्रथम अनुच्छेद में 'भारत राज्यों का संघ है'बताया गया है। इस तरह से प्रथम अनुच्छेद में भारत में राष्ट्रीयता बनाये रखने के उद्देश्य से federation' शब्द का प्रयोग न करके 'Union' संघ का प्रयोग किया गया है। इससे प्रतीत होता है कि भारतीय संघ, भारतीय राज्यों के द्वारा किसी संविदा का परिणाम नहीं है| फलत : भारतीय संघात्मक व्यवस्था को कानूनी तौर पर ऐसा ढाँचा बनाया गया है जिसमें केंद्र पर राज्य पूरे तरह से निर्भर नहीं है। उनका क्षेत्राधिकार ही भलीभांति संविधान में सुनिश्चित कर दिया गया है। कालांतर में ऐसा देखा जाता गया केंद्र राज्यों के मुकाबले काफी मजबूत है। यह स्थिति उस समय बदल जाती है जब गठबंधन वाली सरकारें बनतीं हैं । अत: गठबंधन राजनीति के परिप्रेक्ष्य में केंद्र राज्यों के सम्बन्धों की क्या स्थिति रहती है। भारतीय राजनीति को समझने की दृष्टि से जानना यह अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय राजनीति के परिदृश्य में समय समय पर परिवर्तनों के साथ भारतीय स्वरूप में परिवर्तन होता रहा है। सन् 1950 से सन् 1967 तक केंद्रीकृत संघवाद का काल कहा जा सकता

है। केंद्र और राज्यों के मध्य उभरते मतभेदों को संगठनात्मक स्तर पर ही दूर कर लिया जाता था। सन् 1967 के बाद शक्ति संतुलन का झुकाव राज्यों पर हुआ। अधिकांश राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें केंद्र के नियंत्रण में उस प्रकार नहीं रही, जिस प्रकार कांग्रेसी सरकारें रहतीं थीं। पांचवीं लोकसभा 1972 के चुनावों तथा जनवरी 1980 ई. में लोकसभा एवं विधान सभाओं के चुनाव के बाद शक्ति संतुलन पूर्णत: केंद्र के पक्षों में हो गया, और साथ ही सम्पूर्ण शक्तियाँ केंद्र में समाहित हो गयीं।

मार्च 1977 में हुये छठे चुनावों में कांग्रेस की करारी हार ने भारतीय राजनीति का परिदृश्य ही बदल डाला। जनता पार्टी की सरकार जो विभिन्न घटकों से बनी, कमजोर सरकार सिद्ध हुई। राज्यों के सरकारों ने केंद्र से भरपूर सौदेबाजी की।

सन् 1989 से लेकर सन् 1999 तक लोकसभा चुनावों के फलस्वरूप भारत में संघवाद के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ भरपूर सौदेबाजी का सिलसिला चला। भारतीय राजनीति के इतिहास में एक एतिहासिक मोड़ बाजपेयी सरकार के गठन के स्वरूप आता है। सन् 1999 से लेकर सन् 2004 तक केंद्र में भाजपा की सरकार रही जिसे एक महान गठबंधन के रूप में जाना जाता है। भारतीय संघवाद का बदलता स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

वाजपेयी सरकार ने 11 मई और 13 मई, 1998 में राजस्थान के पोखरन नामक स्थान पर पांच नाभिकीय परीक्षण करके तथा भारत को एक गैर-घोषित नाभिकीय शक्ति के रूप में प्रदर्शित करके अपनी निर्वाचकीय शपथ को पूरा किया। 26 अप्रैल, 1999 को मात्र 13 मास पुरानी लोकसभा को राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सलाह पर लोकसभा को भंग कर दिया। सितंबर-अक्टूबर, 1999 में 13वीं लोकसभा के चुनाव कराए गए। इन चुनावों के अवसर पर 24 राजनीतिक दलों ने मिलकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नाम से एक महान गठबंधन बनाया। इस गठबंधन में अधिकतर वे ही दल सम्मिलित थे जो 12वीं लोकसभा में सरकार में सम्मिलित थे। एन.डी.ए. ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत किया। इस गठबंधन ने उस राजनीतिक दलों, जिन्होंने राष्ट्रीय हित से ऊपर राजनीतिक निषेधवाद, संकीर्ण निजी हितों और सत्ता की लालच को अपना स्वार्थ बनाया पर आरोप लगाया कि उन्होंने 1999 के चुनाव राष्ट्र पर थोप दिए हैं। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने कांग्रेस, बसपा, वाम मोर्चे, ए.आई.डी.एम.के. इत्यादि को कटु अलोचना का शिकार बनाते हुए

कहा कि इन्होंने अपनी नकारात्मक भूमिका से देश में राजनीतिक अस्थिरता फैलाई। 16 अगस्त, 1999 को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने अन्य वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में सुदृढ़, समृद्ध और स्वाभिमानी नवभारत बनाने के वायदे के साथ 17 पृष्ठों वाला एक संयुक्त चुनावी घोषणा-पत्र जारी किया। घोषणा-पत्र में कहा कया कि आज चुनाव राजनीतिक निषेधवाद, अनिश्चितता और वंशवाद के युग को अंतिम रूप से समाप्त करने के लिए देश को एक महान अवसर प्रदान करता है। 24 राजनीतिक दलों और सूमहों ने एन.डी.ए. ने अटल बिहारी वाजपेयी को अपना संसदीय नेता चुना था और 13 अक्टूबर, 1999 को वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने केंद्रीय सरकार का निर्माण किया था। अप्रैल-मई 2004 में 14वीं लोकसभा के चुनावों से पूर्व पार्टी के अनेक सहयोगी, जिनमें डी.एम.के., पी.एम.के., एम.डी.एम.के., असम गण परिषद, इंडियन नेशनल लोकदल, हरियाणा विकास पार्टी, राष्ट्रीय लोकदल, झारखंड मुक्ति मोर्चा, नेशनल कांफ्रेंस आदि शामिल थे, सभी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का साथ छोड़ दिया, जिसके कारण सहयोगी दलों की कमी हो गई।

1999 के लोकसभा चुनाव में इस गठबंधन को 304 स्थान प्राप्त हुए थे। गठबंधन में भाजपा को सबसे अधिक 182 स्थान प्राप्त हुए थे। मई, 2001 में इस राजग गठबंधन ने चार राज्यों-असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु व केरल तथा केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी के विधानसभा में चुनाव लड़े। इन चुनावों में इस गठबंधन को भारी पराजय का सामना करना पड़ा। फरवरी, 2002 में चार राज्यों-पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और मणिपुर की विधानसभाओं में भी मोर्चे को भारी पराजय का सामना करना पड़ा।

वर्तमान समय में एन.डी.ए. को पूर्ण बहुमत प्राप्त होने के बावजूद भी कई दलों का समर्थन प्राप्त है। यह एन.डी.ए. की सरकार नैतिक परिचय है।

वर्तमान समय में गठबंधन सरकार का दौर है या भविष्य में भी रहेगा यह कहना मुश्किल है। पार्टी को सम्पूर्ण बहुमत मिलना मुश्किल है। वर्तमान समय में केंद्रीय स्तर पर या जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं अधिकांश में जनता किसी एक दल के पक्ष में मतदान करती हुई नजर आ रही है।

प्रधानमंत्री अटल जी ने कहा था कि "गठबंधन सरकार बनाना तो आसान है मगर उसे चलाना अत्यंत कठिन कार्य है।" अटल जी के समय में गठबंधन सरकार ने '**राजनीति धर्म को निभाया**'। गठबंधन सरकार का सर्वप्रथम सफलता पूर्वक संचालन माननीय अटल जी ने किया।

अतः भारतीय राजनीति के अध्ययनकर्ताओं को यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि गठबंधन सरकारें किन-किन परिस्थितयों में बनती है? गठबंधन सरकारों में केंद्र की वास्तविक स्थिति क्या रहती है? गठबंधन सरकारों में केन्द्र व राज्यों संबधों का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है?

प्रस्तावित अध्ययन के यही मुख्य मुद्दे है। वस्तुतः अध्ययन का मुख्य बिंदु, गठबंधन सरकारों में केंद्र की भूमिका पर है।

**ii. साहित्य का पुनरवालोकन**

1990 के दशक में भारत मे सांप्रदायिकता, उदारीकरण, नई आर्थिक सुधारों एवं विदेश नीति एवं कूटनीति का बहुत ही सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है। - राव, (1990).

1. कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति पर, इस पुस्तक में लेखक ने राजनीति नेहरू, गांधी परिवार खासकर सोनिया गांधी की राजनीति के सूझ-बुझ के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला है। -सिंह, (2014).

2. इस पुस्तक में इन्होने भूतपूर्व प्रधानमंत्री के कार्यकाल में अनिर्णय की स्थिति द्वंद एवं मानवीय दुर्बलता पर विस्तार से प्रकाश डाला है। -बारू, (2014).

3. इस पुस्तक में (U.P.A) गठबंधन की सरकारो एवं (N.D.A) की सरकारों के क्रिया कलापों उपलब्धियों एवं विफलताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। -भाम्भरी, (2013).

4. इस पुस्तक में उन्होने गठबंधन की राजनीति एवं गठबंधन सरकारों पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। साथ ही किस प्रकार 1990 के दशक में राष्ट्रीय पार्टी के साथ क्षेत्रीय पार्टी का सौदेबाजी हुआ, इसका विस्तार से उल्लेख किया गया है।

   क्या भारत में आगे भी गठबंधन सरकार कायम रहेगी या फिर उसका अन्य विकल्प उभरकर सामने आएगा। -भाम्भरी (2009).

5. इस पुस्तक में पृष्ठ. 101-102 में मिली जुली सरकारों के आगमन के कारणों एवं भारतीय राजनीति में अहम भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। लेकिन इसमें इन सरकारों का केंद्र और राज्य संबंधों पर क्या इसका प्रभाव पड़ा? इस पर अध्ययन नहीं किया गया।

   इस शोध प्रबंध में इस पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

6. इस कृति में गठबंधन सरकार के पक्ष-विपक्ष में एवं राजनीति अस्थिरता के संदर्भ में कई स्तरीय लेखों एवं निबंधों का उत्कृष्ट संकलन है। - झा, (2012).

7. लेखक अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'भारत में राजनीति'में मंतव्य दिया है कि जाति भारतीय राजनीति की एक वास्तविकता है। भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को सकारात्मक एवं विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की गई है। भारतीय राजनीति में कांग्रेस का बढ़ता वर्चस्व का स्थान दिया है। इसे 'कांग्रेस प्रणाली' कहा है। - कोठारी, (2013).

8. इस पुस्तक मे अपना तर्क दिया है कि जहां देश के समझ कुछ अहम मुद्दों जैसे-आर्थिक उदारीकरण की नीति, खुदरा व्यापर, महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त कानून, उच्च शिक्षा में निजी व विदेशी संस्थानों के प्रवेश पर कुछ सहमति बनी है।

   क्षेत्रीय आकांक्षाओं को अधिक प्रतिनिधित्व मिल रहा है। इस पर गंभीर विचार किया गया है। -सिंह, (2013).

9. इस पुस्तक में लेखक ने संघवाद का बदलता हुआ स्वरूप पर बहुत सुंदर प्रकाश डाला है।

   भारतीय संघ की जड़ें देश के संघीय इतिहास और क्षेत्रीय विभिन्नता में वृद्धि होना व कांग्रेस पार्टी का तानाशाही समाप्त होना एवं राज्यों में नए राजनीति दलों का उदय से राजनीतिक गतिशीलता प्रदान हुई है।राज्यों की अधिक से अधिक स्वायत्तता मिले वह भी बड़ी ज़ोर-शोर से उठ रही है। -सिंह, (2011).

10. इस किताब में अपना मत देते हुए कहा है कि भारतीय राजनीति में जहां तक बहूआयामी दलीय व्यवस्था विकसित हुई, वहीं ध्रुवीकरण के प्रयास भी हुए। जहां एक और कांग्रेस पार्टी का पतन हुआ, वहीं दूसरी ओर मिली-जुली सरकारो का प्रयोग सफल नहीं हो पाया। भारतीय राजनीति में गठबंधन की राजनीति के उत्तरदायित्व एवं जबाबदेह का निर्वाह में सफल नहीं हो सका। - मंगलानी, (2015).

11. इस किताब में दर्शाया गया है कि अधिकांश राज्यों में मिली जुलीं सरकारों का गठन और गैर कांग्रेसी दलों के गठजोड़ से हुआ क्योंकि लगभग सभी दलों का उद्देश्य राजनीति सत्ता को प्राप्त करना और और कांग्रेस को सत्ता से अलग रखना था। गैर कांग्रेसी दल सैद्धांतिक

और नीति संबंधी मतभेदों के बाद भी सरकार बनाने के लिए आपस में मिल गए। -सईद, (2013).

12. बहुदलीय व्यवस्था में गठबंधन की राजनीति के परिणामस्वरूप बड़े दलों का टूटना एवं नए दलों का गठन भारतीय राजनीति की पहचान बन गई है। क्षेत्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव ने गठबंधन की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। -चौधरी, (2013).

13. लेखक ने पृ. सं.19 में वर्तमान संदर्भ में केंद्र राज्य संबंधों का वर्णन मिलता है। केंद्र एवं राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारों के आगमन से इनके संबंधो में क्या परिवेर्तन हुए है इसका अध्ययन किया गया है लेकिन यह अध्ययन क्षेत्र प्रयाप्त नहीं हैं।इसलिए इस शोध अध्ययन के माध्यम से इस पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला जाएगा। -नायर, (2000).

14. इस कृति में 1989 तक ही केंद्र राज्य संबंधों पर अध्ययन किया गया है लेकिन इसमें गठबंधन की राजनीति इसके बाद का अध्ययन शामिल नहीं किया गया है। इस समय में केंद्र राज्यों के मध्य किस प्रकार क्षेत्रीय पार्टी केंद्र की सत्ता में अपना स्थान बनाया जिसका वर्णन नहीं किया गया है। इस शोध प्रबंध के माध्यम से इन पक्षों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा। -शर्मा, (1986).

15. इस पुस्तक पृष्ट संख्या 15 में गठबंधन सरकारों के आगमन से लेकर वर्तमान समय तक केंद्र-राज्य संबंधों का अध्ययन किया गया है। लेकिन यह अध्ययन क्रमशः नहीं किया गया है। अपने शोध प्रबंध के माध्यम से क्रमशः और सोपान रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। -राम, (2007).

16. भारत विविधता पूर्ण और लोकतान्त्रिक देश में क्षेत्रवाद का होना स्वाभाविक अवधारणाएँ हैं। भारत के विकास में क्षेत्रवाद सामान्यतः अलगाववादी नहीं है। भारत के विकास में क्षेत्रवाद का अत्यंत भूमिका रही है। भारत में क्षेत्रीय दलों की स्थापना और उनमें सक्रिय रूप से भाग लेने वाले अधिकतर लोग शिक्षित और आधुनिक विचारों से युक्त हैं। यदि विकास समुचित नहीं हो पाता है तो क्षेत्रवाद हिंसा का भी सहारा लेता है। -कौशिक, (1990).

17. 1990 के दशक में तो क्षेत्रीय राजनीति इतनी मजबूत हो गई कि उसने कई बार देश कि विदेश नीति तक प्रभाव डालने की कोशिश कर दी। उस समय के  तत्कालीन प्रधानमंत्री के

साथ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री बांग्लादेश जाने से तैयार नहीं हुई क्योंकि तीस्ता-जल बंटवारे से वह केंद्र से सहमत नहीं थे। -योजना, (फरवरी2015).

18. भारतीय राजनीति गठबंधन के दौर में न केवल प्रवेश कर चुकीहै , गठबंधन की सरकारों का गठन अब भारतीय लोकतंत्र का वर्तमान और आगामी अतीत नज़र आ रहा है। राष्ट्रीय दलों ही नहीं, क्षेत्रीय दलों की पैठ मतदाताओं में जितनी गहरी होती जाएगी, यह चलन बढेगा । क्षेत्रीय मुद्दों पर ही नही, राष्ट्रीय मुद्दों पर भी अपने क्षेत्रीय दलों का मतदाता का भरोसा लगातार बढ़ रहा है। यही वजह है कि मतदाता चाहता है कि राष्ट्रीय स्तर पर भी उसका प्रतिनिधित्व उसके क्षेत्रीय दल करें। पिछले लगभग एकदशक सेमत दाताओं ने गठबंधन की सरकारों के गठन का जनादेश दिया है । वाजपेयी जी ने जो उपलब्धियाँ हासिल की है उन्हें सहज शब्दों में कहा जा सकता है- जो कहा वो कर दिखाया। प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के बाद भी उनकी कथनी और करनी एक ही बनी रही ।वे कभी भी सिद्धांत से समझौता नहीं किये । -घटाटे, (2009).

19. जनवरी 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपयी ने अपनी आंतरिक भावनाऔ को इस तरह व्यक्त किया था, “गठबंधन सरकार बनाना आसान है, पर इसे चलाना आसान नही है।” देश ने अब गठबंधन के युग में प्रवेश किया है । भाजपा और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियों के आलावा क्षेत्रीय पार्टियाँ भी भारतीय राजनीति का हिस्सा बना चुकी हैं। लेकिन जब तक ये राजनीतिक दल गठबंधन के व्यापक हितों के अनुरूप अपने सीमाएं नही पहचानेगे तब तक गठबंधन का युग अस्थिरता से भरा रहेगा, जिससे न तो आर्थिक विकास हो सकेगा, न कानून व्यवस्था संतोषपरक हो सकेगी।’’

उन्होंने सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे देश के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियों को देखते हुए अपनी नीतियों के निर्धारण में गहराई से सोच-विचार करे । जहाँ तक स्वयं अटल जी का सम्बन्ध है, उनके लक्ष्य स्पष्ट हैं । वह जहाँ तक संभव हो, सबको साथ लेकर चलते थें। साथ - ही-साथ जहाँ तक देश- हित की बात है, वह चाहे कुछ भी हो जाये, समझौता करने वाले नहीं है । इसी का परिणाम है कि उन्होंने छः साल से अधिक तक स्थिर सरकार दी है और यह सिद्ध किया है कि गठबंधन और स्थिरता भी साथ-साथ चल सकते हैं । राष्ट्रीय हित को महत्व दिया। - घटाटे, (2008).

## III. शोध के उद्देश्य

- भारतीय संविधान एवं कानूनों में चित्रित संघवाद के प्रतिमान का विश्लेषण करना।
- विशेषतः गठबंधन के राजनीतिक युग के परिप्रेक्ष्य में केंद्र की उभरती भूमिका का विश्लेषण करना।
- गठबंधन की राजनीतिक का भारतीय राजनीति व्यवस्था पर पड़ने वाले दूरगामी प्रभावों का आकलन करना।

## IV. शोध परिकल्पनाएं

- गठबंधन की राजनीति में समावेशी राजनीतिक नेतृत्व को प्रश्रय दिया है।
- गठबंधन की राजनीति के साथ-साथ केंद्र के मुकाबले राज्यों की स्थिति मजबूत हुई है।
- गठबंधन की राजनीति से विशेषतः प्रधानमंत्री पद की स्थिति दुर्बल हुई है।
- गठबंधन की राजनीति संकुचित राजनीति को प्रश्रय प्रदान करती है।

## V. शोध प्रश्न

- भारतीय संविधान एवं विधानों में चित्रित संघवाद का कैसा स्वरूप है?
- गठबंधन सरकारों के निर्माण से भारतीय संघवाद किस तरह प्रभावित होता है?
- गठबंधन सरकारों के निर्माण से उत्पन्न राजनीति नेतृत्व के स्वरूप एवं संघवाद पर उसका कैसा प्रभाव रहा है?

## VI. शोध की प्रासंगिकता

भारत में राज्या एवं केंद्र के बीच शक्ति-संतुलन की परिकल्पना की गई थी, लेकिन वह संतुलन केंद्र की ओर झुका हुआ माना जा सकता है। इसके पीछे भारत की विविधता एवं एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने का उद्देश्य निहित था, आरंभिक दशकों में भारतीय राजनीतिक दलों का स्वरूप अखिल भारतीय था जो क्रमशः क्षीण होकर क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में परिवर्तित होने लगा। इसके परिणामस्वरूप केंद्र व राज्यों के बीच का संबंध नए तरीके से परिभाषित होने लगा।

संघवाद पर एवं केंद्र राज्यों संबंधों पर बहुत सारे अध्ययन हो चुके हैं यहां तक गठबंधन राजनीति पर भी, गठबंधन अध्ययनों का अभाव नहीं है। लेकिन आज गठबंधन सरकार भारतीय राजनीति की एक शैली बन गया है कि यह जानना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है कि गठबंधन सरकारों से क्या गठबंधन सरकार कमजोर हुआ है कि मजबूत हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन का मुख्य जोर इस प्रकार के शासन में केंद्र की भूमिका पर जोर है। ऐसे अध्ययन से भारतीय राजनीति में उभरते प्रतिमान का स्वरूप अस्पष्ट होगा। साथ ही इससे यह भी अस्पष्ट होगा कि राज्यों की अपनी स्वायत्तता बनाए रखने के लिए किन-किन परिस्थितियों एवं चुनौती का सामना करना पड़ता है, तथा केंद्र की इस सिलसिले में क्या भूमिका होती है। इसलिए इस प्रकार के अध्ययन से भारतीय राजनीति के उभरते प्रतिमान का पता चलेगा।

जो संबंधित शोधकर्ताओं एवं अध्ययनकर्ताओं के लिए उपयोगी साबित होगा।

## VII. शोध-प्रविधि

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य हेतु ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, गुणात्मक, समस्या-समाधान मूलक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकालयों और संबंधित अध्ययन केंद्रों में उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का भी सहयोग लिया गया है।

## VIII. शोध की सीमा

प्रत्येक शोध को व्यवस्थित ढंग से संयोजित करने हेतु कुछ सीमाओं को निर्धारित करना आवश्यक होता है। अतः इस शोध में एक गठबंधन सरकारों के कार्यकाल का अध्ययन किया जा रहा है। इसलिए यह अध्ययन गठबंधन सरकार एवं केंद्र-राज्यों के संबंधों के बारे में किसी संपूर्ण निष्कर्ष तक पहुंचने का दावा नहीं कर सकता।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की समय अवधि इस अध्ययन का समय भारत में गठबंधन सरकार (1999 से 2004) तक का रखी गई है।